दिल्ली

सेंचुरी सेलिब्रेशन

12 दिसंबर 1911 को दिल्ली बनी थी भारत की राजधानी

दिल्ली में भारत के इतिहास की झलक दिखाई देती है। यहां अलग-अलग सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और राजनैतिक धाराओं को आसानी से जगह मिल जाती है। यहां पर सभी का वेलकम किया जाता है। क्वॉलिटी एजुकेशन के मामले में दिल्ली बहुत आगे बढ़ चुकी है और देश से ही नहीं बल्कि विदेशों से भी स्टूडेंट्स यहां पढ़ाई के लिए आ रहे हैं। - *प्रो. दिनेश सिंह, वाइस चांसलर, डीयू*

I love Delhi

दिल्ली को राजधानी बने सौ साल हो गए हैं। दिल वालों के इस शहर में हर कोई इस खास दिन को सेलिब्रेट कर रहा है। हमने यहां के बाशिंदों से पूछा कि आखिर इस शहर में आपको क्या लगता है खास, तो हमें मिले कई दिलचस्प जवाब :

मुझे दिल्ली के लोकल मार्केट्स सबसे अच्छे लगते हैं। शहर में मॉल कल्चर के आने के बाद भी इनका वजूद कायम है और यहां जरूरत की हर चीज कम दामों पर मिल जाती है।
-किरण भारती, हाउसवाइफ

दिल्ली में घूमने के लिए हैंग आउट्स की कमी नहीं है और यही बात इस शहर को सबसे खास बनाती है। बड़े-बड़े मॉल्स और मार्केट के अलावा काफी अच्छे मॉन्युमेंट्स भी हैं।
-ज्योति मलिक, स्टूडेंट

दिल्ली के लोग खाने के शौकीन है तो यह शहर भी आपको खाने के ढेरों ऑप्शंस देता है। यहां रेस्टोरेंट्स की कमी नहीं है लेकिन मुझे दिल्ली का स्ट्रीट फूड बेहद पसंद है।
-अवंतिका श्रीवास्तव, स्टूडेंट

मुझे इस शहर का बिंदास लाइफस्टाइल बहुत पसंद है। यहां के लोग खुलकर अपनी लाइफ जीते हैं। इसके अलावा जरूरत पड़ने पर एक दूसरे के काम आने का जज्बा भी अच्छा लगता है। *-मनीष, स्टूडेंट*

25 साल बाद रोड पर नहीं मिलेगी जगह

2036 में होंगी 2 करोड़ गाड़ियां, बनानी होंगी एलिवेटेड और अंडरग्राउंड रोड

रामेश्वर दयाल || नई दिल्ली

दिल्ली के लोगों को रोजाना ही सड़कों का जाम झेलना पड़ता है। ट्रांसपोर्ट से जुड़े कुछ प्रोजेक्ट तो बने लेकिन दिक्कतें कम नहीं हुईं। दिल्ली मेट्रो के प्रोजेक्ट को छोड़ दें तो ज्यादा हल नहीं मिले। अब सवाल यह उठ रहा है कि बढ़ती गाड़ियों के बेड़े को कैसे कंट्रोल किया जाए और उन्हें चलाने के लिए सड़कों और दूसरे साधनों को कैसे बढ़ाया जाए।

ज्यादा गाड़ियों की दिक्कत

राजधानी में इस समय करीब 69.32 लाख गाड़ियां रजिस्टर्ड हैं। ट्रांसपोर्ट डिपार्टमेंट के मुताबिक, हर साल सड़कों पर 5 लाख गाड़ियां उतर रही हैं, जिससे हालात भयानक होते जा रहे हैं। सरकारी आंकड़ों के अनुसार राजधानी में सड़कों की लंबाई करीब 31,432 किमी है। जो इन गाड़ियों के लिए नाकाफी होती जा रही है। पीडब्ल्यूडी और एमसीडी का कहना है कि बहुत मेहनत की गई तो 25 सालों में इन सड़कों की लंबाई 15 पर्सेंट और बढाई जा सकती है, जो बढ़ती गाड़ियों और आबादी के लिए एकदम नाकाफी हैं। इस मामले में अगले सालों में दिल्ली की तस्वीर डराने वाली है।

जमीन पर नहीं जगह

दिल्ली के पूर्व टाउन प्लानर आर. जी. गुप्ता का कहना है कि अगर दिल्ली में मेट्रो नहीं चल रही होती तो अब तक पूरा ट्रैफिक सिस्टम ही ठप हो गया होता। अब भविष्य में और भी ऑप्शनों पर ध्यान देना होगा। उन्होंने कहा कि चूंकि जमीन पर सडकों के लिए जमीन नहीं है इसलिए सरकार को सड़कों के ऊपर (एलिवेटेड) और उनके नीचे (अंडरग्राउंड) सड़कों का निर्माण करना होगा। इसके अलावा बड़े नालों के ऊपर और नीचे भी सड़कें बनाई जा सकती हैं। सरकार को पार्किंग पर भी ध्यान देना होगा, वरना सड़कें ही पार्किंग की जगह बन जाएंगी और समस्या वैसी ही रहेगी। उसके लिए पार्कों, स्कूलों और कॉलेजों के नीचे पार्किंग बनाई जा सकती है।

बचाव और भी हैं

पूर्व प्लानिंग कमिश्नर ए. के. जैन इस बात से काफी नाराज हैं कि मेट्रो को छोड़कर कोई प्रोजेक्ट भविष्य को ध्यान में रखकर नहीं बनाए गए। रोड या ट्रांसपोर्ट की कोई भी योजना अगले 100 साल को ध्यान में रखकर बनाई जाती है, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। खास बात यह है कि सिर्फ अंग्रेजों ने 100 साल को ध्यान में रखकर ही लुटियंस दिल्ली का निर्माण किया, जिस वजह से आज भी वहां ट्रैफिक स्मूद चलता है। उनका कहना है कि ऐसे रोजगार पैदा करने होंगे जो ट्रैवल की जरूरत को कम करें। इसके लिए ई-गवर्नेंस के साथ साथ वर्किंग प्लेस भी घरों के आसपास ईजाद करने होंगे। अंडरग्राउंड सड़कें भी इस समस्या का ठीक हल है।

योजनाएं भी बहुत हैं

वैसे तो दिल्ली वालों को सड़कों और ट्रैफिक समस्या से बचाने के लिए कई योजनाएं बनाई गई हैं और सरकार दावा कर रही है कि अगले कुछ सालों में उनका असर दिखने लगेगा। इनमें बाहरी ट्रैफिक को राजधानी में न घुसने देने के लिए 150 किलोमीटर लंबा ईस्टर्न एक्सप्रेस वे और करीब 146 किमी लंबा वेस्टर्न एक्सप्रेस वे शामिल है।

VISION 2036

रोड, ट्रांसपोर्ट

केंद्र सरकार का मानना है कि राजधानी का मास्टर प्लान अगले 25 सालों को ध्यान में रखकर बनाया जाएगा, ताकि दिल्ली का सही विकास हो और लोगों को सुविधाएं मिलें। अगले 25 सालों में दिल्ली की सड़कों की तस्वीर पूरी तरह बदल जाएगी। जाम की वजह से जूझ रही दिल्ली में अंडरग्राउंड रास्तों और एलिवेटेड रोड का ही ऑप्शन होगा।

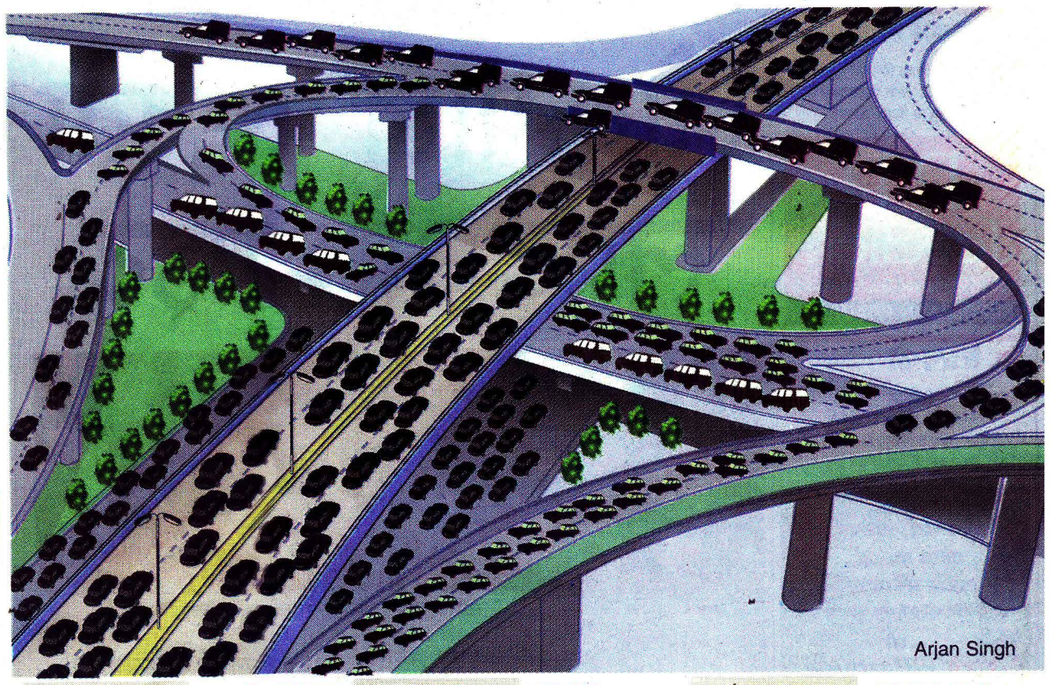

Arjan Singh

1967 में दिल्ली बना था सबसे पहला फ्लाईओवर, वेस्ट दिल्ली में शादीपुर से पटेल नगर तक

1965 में बना दिल्ली का सबसे पहला सबवे, एलएनजेपी हॉस्पिटल के पास, इसे कहा जाता था सुरंग मार्ग

2.45 करोड़ हो सकती है अगले 25 साल में दिल्ली की आबादी, इस वक्त 1.67 करोड़ लोग हैं दिल्ली में

69 लाख से ज्यादा गाड़ियां रजिस्टर्ड हैं दिल्ली में, 62 पर्सेंट टू-वीलर हैं, हर साल 5 लाख नई गाड़ियां जुड़ रही हैं

50 फ्लाईओवर, रेलवे अंडर ब्रिज और रेलवे ओवर ब्रिज हैं दिल्ली में, नए फ्लाईओवर धीमी स्पीड से चल रहे हैं

15% और बढ़ाई जा सकती है दिल्ली में सड़कों की लंबाई, अभी 31,432 किमी लंबी हैं दिल्ली की सड़कें

बाहरी राज्यों की गाड़ियों की एंट्री रोकने के लिए चल रहे हैं दो प्रोजेक्ट

1. ईस्टर्न एक्सप्रेस वे- यह सड़क करीब 150 किलोमीटर लंबी होगी जो दिल्ली सोनीपत बॉर्डर स्थित कुंडली से शुरू होकर मावीकला, दुहाई, डासना होते हुए पलवल की ओर निकल जाएगी

2. वेस्टर्न एक्सप्रेस वे - यह सड़क करीब 136 किलोमीटर लंबी होगी जो कुंडली से शुरू होकर बहादुरगढ़, नजफगढ़ आउटर, एनएच-8 होते हुए मथुरा रोड (एनएच-2) की ओर निकल जाएगी।

दिल्ली-एनसीआर के लिए रेलवे का रैपिड रेल कॉरिडोर

दिल्ली से यूपी और हरियाणा के आठ जिलों के लिए 120 किमी की स्पीड से ट्रेन चलाई जाएंगी। इस पूरे ट्रैक पर मात्र 43 रेलवे स्टेशन बनेंगे।

एक्सप्रेस-वे प्रोजेक्टों को लेकर सरकारों को विल पावर दिखानी होगी और सड़कों को भी दुरुस्त करना होगा, वरना इस मोर्चे पर दिल्ली का भविष्य काफी डराने वाला साबित होगा।
- जगदीश ममगाई, चेयरमैन, एमसीडी (वर्क्स कमिटी)